युवा जीवन

अक्टूबर 2021

कादोश

इब्रानी नाम "यहोवा कादोश" जिसका अर्थ है "पवित्र परमेश्वर"

प्रस्तावना

पवित्रता

प्रिय युवाओं को प्रेममय नमस्कार

परमेश्वर की हर रचना सुंदरता व आश्चर्य की बात है। और प्रत्येक रचना की अपनी विशेष प्रकृति होती है। अरमाइन (न्योले की जाति का एक जन्तु) इस तरह का जीव है जो ऑस्ट्रिया के बर्फ क्षेत्र में देखा जाता है। इसकी एक अनूठी प्रकृति है। यह छोटे जानवरों और पक्षियों का शिकार करता है। इसकी बाहरी त्वचा सफेद रंग की और खूबसूरत होती है। कुछ समय तक इसकी खाल का उपयोग यूरोपी राजाओं की पोशाक बनाने में किया जाता था। इसे पकड़ना आसान नहीं है। इसलिए इसे पकड़ने के लिए, शिकारी इसके गड्ढे के सामने कुछ गंदगी गिरा देते हैं, और शोर मचाने के लिए पटाखे फोड़ते हैं। शोर के कारण डर के साथ अरमाइन अपने गड्ढे में भागेगा। लेकिन उस गंदगी को देखकर वह अपने दोनों पैरों को ऊपर उठाकर वहीं खड़ा हो जाता है क्योंकि वह इसमें प्रवेश नहीं कर सकता। तब वे इसका शिकार करते हैं और इसकी खाल का इस्तेमाल करते हैं। यह एक साधारण प्राणी है लेकिन फिर भी यह कोशिश करता है कि उसे कोई दाग न लगे और अपनी जान तक दे देता है।

युवाओ! जब शैतान आपको आपके आत्मिक जीवन के मार्ग में नीचे गिराने के लिए अशुद्धता फेंकता है तो आपका निर्णय क्या होगा? क्या आप अपवित्रता से दूर भागते हैं? या क्या आप शिमशोन की तरह व्यवहार करते हैं, जिसने इसे छुआ और चखा, यह सोचकर कि यह अशुद्धता उसे भ्रष्ट नहीं करेगी? चूंकि शिमशोन अपनी बुलाहट, अभिषेक और जिम्मेदारी भूल गया था, शैतान ने धीरे-धीरे उसे भ्रष्ट कर दिया, उसके बाल मुंडवा दिए, उसकी आंखें निकाल लीं, उसे जहर दे दिया और उसका अंत कर दिया।

प्रिय युवाओं! आपकी ताकत आपकी पवित्रता है।

पवित्र परमेश्वर (यहोवा कादोश)।

जिसकी वह आप से अपेक्षा करता है वह है पवित्रता।

पवित्रता को अपनी पहचान बनने दो।

जब वह आपका उपयोग करना चाहे तब आपकी पवित्रता आवश्यक है।

यदि आप में पवित्रता के लिए प्यास है,

तो आपको पवित्र करने और आपका उपयोग करने के लिए आपके पास यहोवा कादोश है।

पवित्र होने के लिए और परमेश्वर के हाथों में एक पवित्र बर्तन बनने के लिए खुद को समर्पित करें।

तब जागृति के दिनों में आपकी भूमिका बहुत बड़ी होगी।

हमारे दैनिक जीवन में, हम उन कामों को बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं जो काम हमारे मध्य रहते लोग करते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो दूसरों की कमियों निकालते हैं और अपने रुतबे, ताकत, सम्पत्ति के बारे में डींग हांकते हैं और फिर भी पवित्र होने का दिखावा करते हैं। ये मनुष्य के स्वभाव हैं। प्रभु यीशु मसीह का सबसे महत्वपूर्ण गुण 'पवित्रता' है। पवित्र परमेश्वर चाहते हैं कि हम, हमारे बच्चे भी एक पवित्र जीवन व्यतीत करें। पुराना व नया नियम दोनों में उसने हमें पवित्र जीवन जीने की आज्ञा दी है। ऐसा लिखा गया है, *"...कि तुम में से हर एक अपनी माता और अपने पिता का आदर करे, और मेरे विश्राम दिनों को माने मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।"* (लैव्यव्यवस्था 19:3) बाइबल में।

हालाँकि जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें बहुत ईश्वर हैं, उनमें से कोई भी पवित्र होने का दावा करने के योग्य नहीं है, सिवाय यीशु मसीह के। पवित्रता क्या है? पवित्रता अलग और विशेष होने की स्थिति है। जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, तो फरीसी और विद्वान दोनों ने खुद को पवित्र लोगों के रूप में पेश किया। लेकिन यीशु उनसे अलग थे। एक बार उन्होंने एक महिला को पकड़ लिया जो खुद वेश्यावृत्ति के पाप में लिप्त थी और उन्होंने मूसा के कानून के अनुसार उसे पथराव कर मौत के घाट उतारने का फैसला किया। तब, वे अपने निर्णय पर यीशु की राय पूछने लगे।

अगर हम इस स्थिति के दौरान महिला की मानसिकता के बारे में सोचते हैं, तो उसने अधिकतर यही सोचा होगा कि यीशु उनके बुलावे का साथ देंगे, क्योंकि वह एक 'पवित्र परमेश्वर' है, लेकिन यीशु उसे दंडित नहीं करना चाहते थे। वह चाहते थे कि वह तब से एक पवित्र जीवन व्यतीत करे।

"...उस ने उठकर उन से कहा, जो तुम में निष्पाप हो, वह पहिले उस पर पत्थर मारे (यूहन्ना 8:7)। इस घटना के बाद सभी एक-एक कर वहां से चले गए। वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्री का न्याय किए बिना, उसने कहा, *"...मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।"* (यूहन्ना 8:11) यह यीशु का स्वभाव है। यह दुनिया और इस पर शासन करने वाला बलवान व्यक्ति आपके जीवन में दोष ढूंढता है, लेकिन पवित्र परमेश्वर यीशु मसीह आप पर लोगों की तरह आरोप नहीं लगाते, वह केवल ये चाहते हैं कि आप एक स्वच्छ और पवित्र जीवन व्यतीत करें।

प्रत्येक युवा के मन में उठने वाला एक साधारण प्रश्न यह है, 'क्या ऐसी पापी दुनिया में पवित्र होना संभव है?'

यीशु एक युवा के रूप में साढ़े 33 वर्ष इसी दुनिया में रहे, जिसमें हम रहते हैं। उन्होंने पवित्रता का जीवन जीया और हमारे लिए एक उदाहरण छोड़ा है। *"...योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तो भी निष्पाप निकला।"* (इब्रानियों 4:15)। यदि यीशु पाप मुक्त जीवन जी सकते हैं। हम, जो उनके स्वरूप में बनाए गए हैं, निस्संदेह ऐसा जीवन जीने में सफल हो सकते हैं।

क्या एक मसीही के रूप में पवित्र होना अनिवार्य है?

पाप और गंदगी से भरे इस संसार में, परमेश्वर की इच्छा है *"क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो,"* (1थिस्सलुनीकियों 4:3)। परमेश्वर की इच्छा थी कि वह आकान और उसके परिवार को कनान में ले जाए। लेकिन आकान सांसारिक धन की लालसा में फंस गया और अपनी पवित्रता को नष्ट कर दिया, अंततः वायदे के देश में अपने प्रवेश को खो बैठा। इसलिए यदि आप स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि आप यहां एक पवित्र जीवन व्यतीत करें। *"...सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।"* (इब्रानियों 12:14)

हमें किन बातों में पवित्र होना चाहिए?

हमें अपने कामों और वचनों में पवित्र होना चाहिए (1पतरस 1:15, इब्रानियों 4:29)। गंदी या अनावश्यक बातें करना परमेश्वर को अप्रसन्न करता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आपके शब्द दूसरों में विश्वास को प्रोत्साहित करें।

आँखों में पवित्रता (मत्ती 6;22,23)

दुर्घटना ग्रस्त हुए बिना महंगी कार चलाने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि हेड लाइट अच्छी स्थिति में हो। इसी तरह, अपने शरीर को सुरक्षित रखने के लिए, आपको सावधान रहना चाहिए कि आप अपनी आंखों का उपयोग किस लिए करते हैं। जब आंखें साफ होंगी, तो पूरा शरीर प्रकाश से भर जाएगा। लेकिन जब यह नष्ट हो गई है, तो शरीर अंधकार से भर जाएगा।

विचारों में पवित्रता (रोमियों 8:7)

विचारों को स्वच्छ रखना आज के युवाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। पहले कदम के रूप में, हमें अपने विचारों को पवित्र होने के लिए समर्पित करना चाहिए। ऐसा करने से, हम सांसारिक विचारों से दूर रहते हैं। दुनिया के विचार परमेश्वर के खिलाफ एक पाप हैं। यह परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं।

हृदय में पवित्रता (न्यायियों 16:17)

दाऊद ने परमेश्वर से उसके हृदय को शुद्ध करने और उसे दृढ़ आत्मा का आशीर्वाद देने को कहा। शिमशोन जीवन में गिर गया क्योंकि वह अपने हृदय की रक्षा करने में असफल रहा और इस असफलता के कारण उसने परमेश्वर की दिव्य योजना को बर्बाद कर दिया।

क्या आप जानते हैं कि पवित्र जीवन जीने के लिए आपको सबसे ज्यादा कौन से काम करने चाहिए? आप पवित्र होने का फैसला करते हैं। लेकिन एक या दो दिनों के भीतर निर्णय समाप्त हो जाता है। पवित्र जीवन जीने और अपनी पवित्रता की रक्षा करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें।

1 आपको प्रतिदिन यीशु के लहू से शुद्ध होना चाहिए। आपको अपने पापों को मानना होगा, उन्हें घोषित करना होगा और अपनी आत्मा, हृदय और शरीर पर परमेश्वर की सुरक्षा प्राप्त करनी होगी। यीशु का लहू यह सुनिश्चित करेगा कि आपके द्वारा किए गए पापों के लिए आपको दंडित न किया जाए। (1यूहन्ना 1:7)

2. आपको प्रतिदिन परमेश्वर के वचन पर मनन करना चाहिए। "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ," दाऊद बाइबल में ऐसा कहता है। इसलिए जब हम जल्दी उठते हैं, प्रार्थना करते और परमेश्वर की उपस्थिति और सहायता खोजते हैं, तो हम एक पवित्र जीवन जी सकते हैं।

3.. आपको पवित्र लोगों के साथ संगति करनी चाहिए और एक व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन रखना चाहिए। पवित्र लोगों के साथ मिलाप आपको पवित्र होने के लिए प्रोत्साहित करेगा। दानिय्येल की अपने दोस्तों के साथ संगति ने उसे अपनी पवित्रता की रक्षा करने में मदद की। इसी तरह, आपको अपने दैनिक प्रार्थना समय पर ध्यान देना चाहिए और इसकी अवधि और गुणवत्ता को बढ़ाना चाहिए। यदि आप सुबह प्रार्थना करने के लिए तैयार हैं, तो परमेश्वर आपको पवित्र रहने में सक्षम करेंगे।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आप अपनी ताकत से पवित्र जीवन नहीं जी सकते। जब तुम पवित्र परमेश्वर की ओर देखते हो और पवित्रता की खोज करते हो, तो तुम पापों पर विजयी हो सकते हो। "इसलिए तुम अपने आपको पवित्र करो; और पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। (1पत. 1:16) और तुम मेरी विधियों को मानना, और उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।" (लैव्यव्यवस्था 20:7,8)

जब आप एक पवित्र जीवन जीना शुरू करते हैं, तो आपको ये आशीर्वाद परमेश्वर से मिलेंगे।

· जो शैतान आपको पाप के में धकेलने का प्रयास कर रहा है, वह आपसे डरेगा।

· आपकी प्रार्थना का उत्तर दिया जाएगा।
· परमेश्वर आपको सही इनाम देंगे।
· आप दुष्टआत्माओं पर विजय प्राप्त करेंगे।
·परमेश्वर आपको स्वर्ग से आशीर्वाद देंगे।

चूँकि दानिय्येल ने अपना पूरा जीवन पवित्रता को समर्पित कर दिया था, परमेश्वर ने उन सभी शत्रुओं को नष्ट कर दिया जो उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। उन्होंने दानिय्येल की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और उच्च पद पर रखा।

प्रिय युवाओं! अपने आप को पवित्र आत्मा को सौंप दें! परमेश्वर आपको पवित्र जीवन जीने की दया देंगे। आप भी पापमुक्त जीवन जी सकते हैं!!

मसीहियत की विशेषताएं

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों को नमस्कार! हमने पिछले महीने "मसीहियत की विशिष्टताएं" श्रृंखला शुरू की। और इस श्रृंखला में हमने जो पहला विषय निपटाया वह था "पाप, क्षमा व छुटकारे की वास्तविकता"। इस महीने हम "विश्वास द्वारा से धार्मिकता" विषय पर गौर करने जा रहे हैं।

आप इन विशेषताओं को किसी अन्य धर्म में नहीं देख सकते हैं। अन्य धर्मों के अनुसार कोई व्यक्ति अपने अच्छे कर्मों से धर्मी बनता है। यह किसी के कार्य हैं जो उन्हें धर्मी बनाते हैं। जब कोई व्यक्ति अच्छे काम करता है, तो उसकी धार्मिकता का स्तर बढ़ता है और जब वह बुरे काम करता है तो उसकी धार्मिकता का स्तर कम हो जाता है। इसके विपरीत, मसीहियत धर्म में, जब हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, तो वह हमारे पापों को अपने खून से धोएंगे और पापियों को धर्मी लोगों में बदल देंगे। यीशु ने हमारे पापों को क्रूस पर ले लिया और अपनी धार्मिकता हमें दे दी। यह पवित्र हस्तांतरण तब होता है जब हम उन में विश्वास करते हैं। इसे समझाने के लिए, २ कुरिन्थियों 5:21 कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।"

बहुत से लोग अपनी धार्मिकता की तुलना दूसरों से करते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि उन्होंने जो पाप किए हैं वे दूसरों की तुलना में बहुत कम हैं। मेरे प्यारे दोस्तों, ऐसे विचार स्वै-धार्मिकता की ओर ले जाते हैं। बाइबल कहती है, प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराया जाएगा। हमें खुद को परमेश्वर के पैमाने से जांचना चाहिए न कि दूसरों के द्वारा। लूका 18:10-14 में, दो व्यक्ति, एक फरीसी और चुंगी लेने वाला, मंदिर में प्रार्थना करने गए। फरीसी की प्रार्थना उसकी अपनी धार्मिकता के बारे में थी और वह खुद को चुंगी लेने वाले से श्रेष्ठ मानता था। लेकिन इस चुंगी लेने वाले ने दूसरी ओर बोझ के साथ प्रार्थना की, "परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर"। और बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि चुंगी लेने वाला एक धर्मी व्यक्ति के रूप में वापस चला गया।

हाँ प्यारे दोस्तों, जो धार्मिकता किसी के कर्मों से आती है, उसे स्वै-धार्मिकता के रूप में जाना जाता है। परमेश्वर को उस तरह की धार्मिकता पसंद नहीं है। मसीह में विश्वास करने से पहले, हम पापी थे, तो हमारे कर्म हमें धार्मिकता कैसे ला सकते हैं? इसलिए जब हम उन पर विश्वास करते हैं, तो वह हमें एक धर्मी व्यक्ति बना देते हैं। और वह हमें धर्मी व्यक्ति के काम करने के लिए कहते हैं। यह इफिसियों 2:10 में समझाया गया है जो कहता है, "क्योंकि हम परमेश्वर की रचना हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए।"

हाँ मेरे प्यारे युवाओं, मसीहियत में, हम सबसे पहले मसीह में विश्वास करने के द्वारा उसमें धर्मी बनते हैं। और फिर बाइबल हमें एक धर्मी जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए, यह धार्मिकता जो मसीह में विश्वास के माध्यम से आती है, मसीहियत को दूसरों के बीच एक अद्वितीय और विशेष धर्म बनाती है। ●

परमेश्वर का हाथ

एक ऐसे परिवार में पैदा हुए व्यक्ति के रूप में जो यीशु को नहीं जानता था, मैंने 15 साल की उम्र में अपनी दसवीं क्लास में यीशु को स्वीकार किया। मैं बाइबल पढ़ती और दूसरों के जाने बिना प्रतिदिन प्रार्थना किया करती। मेरे परिवार के सदस्यों को नहीं पता था कि मैं उद्धार पाई हूँ। मेरे परिवार में मेरे अलावा किसी ने भी यीशु को स्वीकार नहीं किया है। 22 साल की उम्र से वे मेरे लिए वर की तलाश कर रहे थे। मैं कोई न कोई बहाना कहकर सब को ठुकरा देती थी। अब मैं 25 साल की हूँ। किसी तरह से इस साल वे मुझे अच्छा लड़का, अच्छी नौकरी, अच्छी तनख्वाह एवं अच्छी शिक्षा के कारण बताते हुए शादी करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। लेकिन मेरी इच्छा एक ऐसे व्यक्ति से शादी करने की है जो उद्धार पाया हो। मैं भी तीन साल से एक ऐसे वर के लिए प्रार्थना कर रही हूं जिसने उद्धार पाया हो। मैं ऐसी स्थिति में हूं जहां मैं और कोई बहाना नहीं दे सकती। क्या मैं अपने माता-पिता के चुने हुए लड़के से शादी कर सकती हूँ, कृपया कुछ सलाह दें? - संध्या, होसुर.

दिल की धड़कन

प्रिय बहन संध्या, हम आपके पत्र के द्वारा आपके दर्द को समझ सकते हैं। एक तरफ यीशु को स्वीकार करने की खुशी व दूसरी ओर ऐसा वर न ढूँढ पाने का दुख जिसने उद्धार पाया हो। आपके विश्वास की परख के जैसे आपको एक उद्धार पाया वर नहीं मिला है। इन दोनो परिस्थितियों को बीच खड़ी रहकर आप जिस दर्द को सह रही हैं हम वह समझ सकते हैं।

संध्या, सबसे पहली बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि इस युद्ध में आप अकेली नहीं है, यीशु आपके साथ हैं। बाइबल भजन संहिता 18:29 में कहती है "क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लाँघ जाता हूँ।" दाऊद का परमेश्वर पर असीम प्रेम व विश्वास था। परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के कारण दाऊद अपने सब काम में सफल था। इसलिए आपको परमेश्वर पर विश्वास या निर्भरता खोने का आवश्यकता नहीं। और साथ ही आपको ऐसे मार्ग पूर्व-निर्धारित न करें जिनको अनुसार परमेश्वर को कार्य करना चाहिए। बाइबल यशायाह 55:8,9 में कहती है, "क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।" और परमेश्वर के मार्ग व विचार बहुत ऊँचे हैं।

जैसे आप कामना करती हैं, परमेश्वर आपको एक उद्धार पाया वर दे सकते हैं और आपको प्रसन्न कर सकते हैं। या हो सकता है कि जिस व्यक्ति को आपके माता-पिता पसंद करें वह यीशु में विश्वास करता न दिखे, लेकिन अपने मन में यीशु पर विश्वास करता हो। कौन जानता है? परमेश्वर आपको इस प्रकार चमत्कार भी दे सकते हैं।

आपके विश्वास को दृढ़ करने के लिए मैं आपको एक घटना बताना चाहता हूं। आपकी तरह एक बहन थी जो एक उद्धार पाये वर की प्रतीक्षा में थी। उसके माता-पिता भी इसी प्रतीक्षा में थे। लेकिन ऐसा संगी नहीं मिल पा रहा था। उसके माता-पिता ने जो तंग आ चुके थे, ऐसा कहते हुए कि वह लम्बे समय तक एक अविवाहित बेटी को

घर बिठाकर नहीं रख सकते, फैसला लिया कि वह उसका विवाह एक गैर-विश्वासी से करेंगे। जैसे ही विवाह का दिन निकट आया, लड़की घबराने लगी। उसे दुख महसूस होने लगा कि उसका विवाह ऐसे व्यक्ति से होने वाला है जिसने कभी सच्चे परमेश्वर को नहीं जाना। तो विवाह के पहले दिन उसने वर को अपने विश्वास के बारे में और अपनी बाइबल के बारे में बताना चाहा जिससे उसे बहुत प्रेम था। जिस घड़ी उसने कहा कि उसने यीशु को स्वीकार किया है और कि यीशु बहुत अच्छे हैं, तो वह हैरान हो गई जब उसके पति ने कहा, प्रभु की स्तुति हो, आमीन। और बताते हुए उसने कहा कि उसने भी प्रभु यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है। वह भी उसे विवाह से पहले इस बात के विषय में बताना चाहता था लेकिन उचित समय न पा सका। उसने ऐसी पत्नी के लिए प्रभु को स्तुति दी जो परमेश्वर से प्रेम करती थी और आगे से वे दोनों परमेश्वर की स्तुति व प्रार्थना करने लगे।

जिस परमेश्वर ने यह उन बहन के लिए किया वह इसे आपके लिए भी करने में सक्षम है। इसलिए आश्वस्त रहें।

इसके अलावा कुछ काम हैं जो आपको इस शादी के समय में करने की जरूरत है।

- गुस्से में आकर बात न करें कि आपके माता-पिता आपको नहीं समझते।
- अपने माता-पिता के खिलाफ कभी मत बोलें।
- यह कहकर उनके दिल को ठेस न पहुंचाएं कि यह आपका जीवन है और आप जानते हैं कि इसके साथ क्या करना है।
- यह कहकर किसी भी समस्या के लिए मार्ग न बना लें कि यह आपका विश्वास व आपका निर्णय है और अपने माता-पिता को निर्णय न लेने दें।
- अपने माता-पिता को अपने रिश्तेदारों के सामने शर्मिंदा न करें।

जो काम आपको करने की जरूरत है

- जैसा कि आपने पहले किया था, विश्वास और उपवास के साथ प्रार्थना करना जारी रखें।
- धैर्य के साथ अपने माता-पिता को एक उद्धार पाया वर पाने के फायदे समझाने की कोशिश करें।
- इंतजार करने के बाद भी अगर आपको उद्धार पाया वर नहीं मिलता है, तो उस व्यक्ति से शादी करें जिसे आपके माता-पिता दिखाएं। तब यदि आप 1पतरस 3:1,2 में बताए गए तरीके के अनुसार जीना शुरू करती हैं तो आप बिना प्रचार किए भी अपने पति को बचा सकती हैं।

तो संध्या व्यथित न हों। जिस परमेश्वर ने आपको बचाया है, वह आपके लिए एक उद्धार पाया वर देंगे। या वह तुम्हारे द्वारा उसके उद्धार का मार्ग खोलेंगे।

यशायाह 59:1 में बाइबल कहती है "सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहरा हो गया है कि सुन न सके।"

इसके अनुसार प्रार्थना व कार्य करें। बचाने वाला परमेश्वर आपके साथ है। ●

आइए अब देखें कि कैसे परमेश्वर ने ऐसी एक बहन को स्वप्न के माध्यम से अपना प्रेम प्रकट किया जो एक ईसाई परिवार में पैदा हुई और पली-बढ़ी लेकिन कई पापों की गुलाम थी।

स्वप्न रूपांतरण

क्या आप हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बता सकती हैं?

थेनकासी जिले में आलंगुलम मेरा जन्म स्थान है। मेरे पिता एक व्यापारी हैं और मेरी मां एक गृहिणी हैं। मेरा एक बड़ा और एक छोटा भाई है। मेरा जन्म एक ईसाई परिवार में हुआ था। लेकिन किसी को भी चर्च जाने की आदत नहीं है। मैं भी नहीं जानती कि पुनरुत्थान का दिन (ईस्टर) किस उद्देश्य से मनाया जा रहा है। हर रविवार, सुबह से रात तक मैं सभी भाषाओं की फिल्में, धारावाहिक और गेम शो देखने में समय बिताती हूं।

एक ईसाई परिवार होने के नाते आप चर्च नहीं गए। लेकिन आपको यीशु के बारे में कैसे पता चला?

मैं आलंगुलम के एक रोमन-कैथोलिक स्कूल में पढ़ रही थी। जब मैं 10वीं कर रही थी तो मेरे सहपाठी हमारे चर्च में आयोजित होने वाली पवित्र संस्कार कक्षाओं के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वे उन कक्षाओं के लिए जा रहे थे। मैं वास्तव में बाइबल से पूछे गए किसी भी प्रश्न का उत्तर देना नहीं जानती। इसलिए मैंने उनके साथ जाने और सीखने का फैसला किया। उसके बाद ही मुझे परमेश्वर के प्रेम, क्रूस पर मृत्यु, पुनरुत्थान, पाप, नरक और स्वर्ग के बारे में पता चला। मैं सचमुच हैरान थी।

वाह...आपको यीशु के प्रेम के बारे में पता चला। परन्तु क्या यीशु ने आपके पापमय जीवन को क्षमा किया?

जब उन्होंने मुझे यीशु के प्रेम के बारे में बताया तो पहली बार मुझे एहसास हुआ कि मैं कितनी बड़ी पापी थी। मुझे एहसास हुआ कि मेरे मन में अभिमान, गुस्सा, गंदे विचार हैं। मैं खुद को धोखा दे रही थी कि मैं पापी नहीं थी और मैं दूसरों की तुलना में धर्मी हूं। पवित्र संस्कार कक्षाओं में मैंने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। जब मैंने अपने पापों के लिए क्षमा और उनकी संतान के रूप में जीवन जीने की मेरी उत्सुकता के लिए प्रार्थना की तो मेरा जीवन बदल गया। तब से मेरी जिंदगी बदल गई। मेरी जिंदगी इस हद तक बदल गई कि लोग मुझसे पूछने लगे कि तुम ऐसे कैसे बदल गई? मैं टीवी के धारावाहिक की लत से मुक्त हो गई थी। मैंने अपने भीतर एक शांति, आनंद, धैर्य और दूसरों को क्षमा करने की प्रवृत्ति महसूस की। मेरा जीवन आनंदमय हो गया। लेकिन मुझे यह आशा नहीं थी कि मैं परमेश्वर के राज्य में जाऊँगी।

ठीक है.. आपने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। क्या आप एक पवित्र जीवन जीने में सफल हो पाई?

मुझे वास्तव में संदेह था कि क्या मैं अंत तक एक पवित्र जीवन जी सकती हूं। उस समय मैंने रात में एक सपना देखा कि मेरे पाँव के नीचे एक बहुत बड़ा कुआँ है। यह बहुत गहरा व काला था। उसमें से एक दुष्टात्मा निकली और बोली, तुमने पापमय जीवन व्यतीत किया और इतने दिनों तक मेरी संतान बनी रही, लेकिन अब क्या तुम सोचती हो कि तुम यीशु को स्वीकार कर उनके राज्य में जा सकती हो! नहीं, मैं तुझे

अनुमति नहीं दूंगी। तुझे मेरे साथ नरक में आना चाहिए। यह कहकर उसने मेरा दाहिना पैर कुएं में खींच लिया। मैं अपनी माँ और पिता से मदद के लिए चिल्लाई जो मेरे पास थे। मैं उन्हें अपने हाथों से पकड़ रही थी। लेकिन उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी। वे मुझे नहीं बचा सके। मुझे लगा कि यह मेरे जीवन का आखिरी दिन है और सब कुछ खत्म हो गया है। उस समय मेरे मन में यह पद दिखा "संकट के दिन मुझे पुकार"। जल्द ही मैं यीशु का नाम कहने की कोशिश कर रही थी। लेकिन मैं वह शब्द नहीं पुकार सकी। मुझे लगा कि कोई मेरी गर्दन दबा रहा है। अंत में किसी तरह मैं यीशु का नाम चिल्लाने में कामयाब रही। जब मैंने अपनी आँखें खोलीं, तो मैंने देखा कि मेरा पैर उस जगह से किसी के द्वारा नीचे खींचा जा रहा है जहाँ मैं शुरू में सोई

थी। साथ ही मैं अपने हाथ को अपनी माँ को थामते भी देख सकती थी। यह सामान्य सपने जैसा नहीं था। यह बहुत वास्तविक था। उस सपने से मुझे न केवल यह आश्वासन मिला कि यीशु मुझसे इतना प्यार करते हैं कि उन्होंने मेरे लिए अपना जीवन दे दिया, बल्कि यह आशा भी की कि परमेश्वर मुझे उन समस्याओं से बचाएंगे जिनका मैं सामना करती हूं। मुझे विश्वास हो गया कि परमेश्वर मुझे अपने राज्य में ले जाएंगे और मुझे एक पवित्र जीवन जीने देंगे।

शानदार .. अपने सपने के माध्यम से आपको परमेश्वर के राज्य के लिए अपना आश्वासन मिला .. क्या आप यीशु मसीह के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित हैं?

मैं मसीह के लिए कोई सेवकाई करना चाहती था जिसने मुझे बचाया। लेकिन उस समय मेरी पारिवारिक स्थिति के कारण यह मेरे लिए एक पहुँच से बाहर का फल था। मेरे परिवार ने मुझे

कभी दरवाजे पर भी खड़े नहीं होने दिया.. तो मैं सेवकाई कैसे कर सकती हूं? मुझे लगा कि यह असंभव है। लेकिन मैं और मेरे सहपाठी रविवार को इकट्ठे हुए और घंटों प्रार्थना करने लगे। इस तरह मेरी स्कूली शिक्षा अच्छी हुई।

ठीक है... आपने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर ली है .. क्या आप कॉलेज में अपने प्रार्थना समूहों को जारी रखने में सक्षम थीं?

मुझे चिंता होने लगी कि क्या मैं अपने कॉलेज के दिनों में मसीह से अलग हो जाऊंगी। इसलिए मैंने एक ऐसे कॉलेज में दाखिला लेने का फैसला किया जहां एक प्रार्थना दल था। मैंने तिरुचेंदूर के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया। हम दूसरों की जानकारी के बिना छात्रावास में प्रार्थना किया करते थे। मैंने सोचा कि एक प्रार्थना समूह में शामिल होने से मुझे एक पवित्र जीवन जीने में मदद मिलेगी। लेकिन जब मैं अपने दूसरे वर्ष की पढ़ाई कर रही थी तो मुझे प्रार्थना समूह का अगुआ बनने के लिए मजबूर किया गया। जल्द ही मैं परमेश्वर के बहुत करीब थी और मैंने उनसे आत्मा का वरदान मांगा। प्रभु ने मुझे वह भी अनुग्रह के साथ प्रदान किया। उन्होंने मुझे कॉलेज के दिनों में एक पवित्र जीवन जीने दिया।

ठीक है... आपने अपना प्रार्थना समूह जारी रखा समूह में आपको किन परिवर्तनों का सामना करना पड़ा?

छात्रावास की एक छात्रा को चर्म रोग था। जब उसने हमारे प्रार्थना समूह में आना शुरू किया तो उसने थोड़ी चंगाई देखी। जब उसने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया तो वह पूरी तरह से ठीक हो गई। वह अब तक मसीह में मजबूत खड़ी है। इसी प्रकार परमेश्वर ने इस प्रार्थना समूह के द्वारा अद्भुत कार्य किए।

क्या आपने कॉलेज के बाद अपना प्रार्थना समूह जारी रखा?

कॉलेज के बाद भी मुझे डर था कि क्या मैं मसीह से दूर हो जाऊँगी और उनके लिए नहीं जीऊँगी। परमेश्वर ने मुझे उन लोगों से जोड़ा जो कॉलेज के बाद घर आने पर मेरे साथ प्रार्थना करते थे। उस स्थिति में मैं मिशन प्रशिक्षण शिविर के लिए यीशु छुड़ाते हैं सैनिक में शामिल हुई। मैंने सीखा कि कैसे परमेश्वर की सेवकाई करनी है। हम सप्ताह में एक बार समूह में प्रार्थना करने लगे। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, यह सप्ताह में तीन दिन हो गया। महीने में एक बार हम उपवास की प्रार्थना करने लगे।

आपने एक साथ प्रार्थना की... इस समय आप मसीह के लिए क्या कर रहे हैं?

वर्ष 2019 में परमेश्वर ने मुझे एक युवा शिविर आयोजित करने में मदद की। वर्ष 2020 में जागृति लानेवाले कैंप में भाग लेने के बाद, परमेश्वर ने मुझे बाल सेवकाई, युवा सेवकाई, कलीसिया सेवाओं का संचालन करने, अलंगुलम तालुक और उसके आसपास के गांवों में सुसमाचार फैलाने में इस्तेमाल किया। परमेश्वर जिसने अपनी सेवकाई के लिए मेरे प्यार को देखा, उसने कई दरवाजे खोले और मेरे परिवार की स्थिति को भी बदल दिया।

आप युवाओं को क्या बताना पसंद करती हैं?

सबसे पहले परमेश्वर के लिए कुछ करने की इच्छा करें और उस जागृति का हिस्सा बनने के लिए तैयार रहें जो होने वाली है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी बाधा कितनी बड़ी है, परमेश्वर इसे बदल देंगे और आपके लिए अपनी सेवकाई करने का मार्ग तैयार करेंगे। तब बहुत सी आत्माएं आपके पास आएंगी और आप उनका मसीह की ओर मार्गदर्शन करेंगे।

प्रिय युवाओं, हालांकि एंसी एक ईसाई परिवार में पैदा हुई थी, परमेश्वर ने उसे कम उम्र में चुना और उसे शुरूआत में उद्धार का अनुभव न होने के बावजूद भी उसे एक पवित्र जीवन जीने वाली बनाया। क्या आप आज चिंतित हैं कि आप पवित्र जीवन नहीं जी सकते? चिंता मत करें। खुद को परमेश्वर के हवाले कर दें। यहोवा आपको पवित्र रखेंगे। ●

परमेश्वर जो हमें पवित्र बनाते हैं

हम एक ऐसे संसार में जी रहे हैं जो पापपूर्ण स्थितियों और अश्लील चित्रों से भरा हुआ है जो हमें सभी प्रकार की दुष्ट प्रकृति से लुभाते हैं। 'क्या हम इन परिस्थितियों के बीच पवित्र रह सकते हैं?' करोड़ों रुपयों का सवाल है जो हर एक के दिमाग में दबाव बना रहा है। परन्तु हमारा सृष्टिकर्ता परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि "मैं यहोवा हूं, जो तुम्हें पवित्र करता है।" (लैव्यव्यवस्था 20:8) परमेश्वर आज हमें देखते हैं और पुष्टि करते हैं कि वह हमें एक पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, "तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।" (यहोशू 3:5) आज हम सभी को एक चमत्कार की आवश्यकता है। यीशु चमत्कार करने के लिए तैयार हैं। जरूरतमंद परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही जटिल या हताश प्रतीत हों, परमेश्वर हमारी समस्याओं को बदल सकते हैं और हमारे लिए चमत्कार कर सकते हैं। वह एक अद्भुत काम करने वाले परमेश्वर हैं। परन्तु अद्भुत कामों को प्राप्त करने के लिए, हमें पवित्र और पापरहित जीवन जीने के लिए स्वयं को समर्पित करना होगा। कभी-कभी, परमेश्वर इतने दयालु होते हैं कि पापी जीवन के बीच भी वे हमारे लिए अद्भुत काम कर सकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह हमारे लिए एक अवसर देना चाहते हैं कि हम उनके प्रेम का स्वाद चखें और पश्चाताप करें। वह अपनी अपार कृपा और दया के कारण कई लोगों के लिए ऐसा करते हैं। लेकिन जिस आधार नींव की परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है वह है पवित्रता। परमेश्वर से अद्भुत काम व आशीर्वाद प्राप्त करना बहुत आवश्यक है।

लोग उम्मीद कर रहे थे कि परमेश्वर एक चटाई पर पड़े लकवा ग्रस्त व्यक्ति को ठीक करने जा रहे हैं। परन्तु जब यीशु ने उनका विश्वास देखा, तो उस से कहा, "ढाढ़स बाँध; तेरे पाप क्षमा हुए" (मत्ती 9:2)। परमेश्वर ने पहिले उसे पवित्र किया, और फिर उसे चंगा किया। परमेश्वर जानते थे कि कोई भी व्यक्ति तब तक चंगाई प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह अपने पापी स्वभाव में बना रहता है। वह एक ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारे सभी पापों को दूर करते हैं जब हम उनके पास विश्वास में आते हैं।

यूहन्ना 5 में भी, हम एक ऐसी घटना के बारे में पढ़ते हैं जहाँ परमेश्वर ने बीमार व्यक्ति को अपने प्रेम व्यक्त किया और उसे चंगा किया। लेकिन वह वहीं नहीं रुके। उन्होंने कहा, *"देख, तू चंगा हो गया है: फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"* (यूहन्ना 5:14) । परमेश्वर हमें चंगा करते हैं ताकि हम एक पवित्र जीवन जी सकें। हमें शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका के घमंड को फिर से गले नहीं लगाना चाहिए।

एक कनानी स्त्री अपनी दुष्टात्मा से ग्रसित बेटी के विषय में बहुत आँसू बहाते हुए यीशु के पास आई। उस ने पुकार कर कहा, हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर! मेरी बेटी दुष्टात्मा-ग्रसित है और बहुत

पीड़ित है। यीशु ने पहले तो कोई जवाब नहीं दिया। वह स्त्री आई और उनके सामने घुटने टेक दिए। "प्रभु, मेरी सहायता करें!" उसने फिर से विनती किया। फिर भी उन्होंने उत्तर दिया, "बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।" "हाँ, सत्य है प्रभु," उसने कहा। "पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं।" यह वार्तालाप संकेत देती है कि यद्यपि यीशु को उसे चंगा करने की इच्छा थी, वह चाहता था कि वह अपने पापों को स्वीकार करे। जब उसने ऐसा किया, तो यीशु ने कहा, *"हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो।" और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई।* (मत्ती 15:28)

पवित्रता क्या है? परमेश्वर का वचन पवित्रता का पैमाना है। परमेश्वर के वचन के अनुसार जीना ही पवित्रता है। बाइबल हमें निर्देश देती है, 'हे पतियों अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया। हे पत्नियों, अपने खुद को अपने पतियों के अधीन करो जैसे तुम प्रभु के अधीन रहती हो। हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित है।' जब पत्नियाँ अपने पतियों की आज्ञा मानती हैं, तो यह पवित्रता है। एक पति को अपनी पत्नी से किसी अन्य से ज्यादा प्यार करना चाहिए। यदि बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान नहीं करते हैं और इसके बजाय उनकी बरबादी करते हैं, तो इसका मतलब है कि यह एक अपवित्र जीवन है। पवित्रता बाइबल के मानकों के अनुसार जीना है।

क्या आपके काम में पवित्रता है?

आपके कार्य स्थल में, वे आपको प्रतिदिन 8 घंटे काम करने के लिए वेतन देते हैं। यदि आप उन 8 घंटों तक ईमानदारी से काम न करके वेतन प्राप्त नहीं करते हैं तो आप में कोई पवित्रता नहीं है।

क्या आपके व्यवसाय में पवित्रता है?

यदि आपके व्यापारिक व्यवहार में जाली खातों के साथ छेड़खानी की गई है, तो इसका मतलब है कि आपके व्यवसाय में कोई पवित्रता नहीं है। आपकी बात, चाल, व्यापार और नौकरी में पवित्रता होनी चाहिए।

पवित्रता क्या है? यह सिर्फ बाहरी दिखावट और कपड़े पहनने की शैली नहीं है। यह परमेश्वर के वचन के मानकों के अनुसार व्यावहारिक जीवन है। यदि हम अपने आप को पवित्रता के अधीन करते हैं, तो परमेश्वर हमें आशीष देंगे। क्या आपके जीवन के हर क्षेत्र में पवित्रता है? जब हम अपने आप को पवित्रता के प्रति समर्पित करते हैं, तो परमेश्वर बहुत बड़े चमत्कार करेंगे।

क्या आप उन लड़खड़ाते लोगों के बारे में सोच रहे हैं जो रिश्वत लेते हैं लेकिन सभी सुविधाओं के साथ एक शानदार जीवन जीते हैं? वास्तव में, उनमें शांति नहीं है। वे बाहर से खुश दिखते हैं। जब वे अपनी चालचलन में लगे रहते हैं, तो अचानक एक दिन परमेश्वर का कोप उन पर पड़ेगा और उन्हें नष्ट कर देगा। इसलिए, अपने आप को परमेश्वर के वचन के अनुसार जीने के लिए समर्पित करें।

मेरे प्यारे युवाओं! केवल यीशु मसीह ही हमें इस पापमय संसार में पवित्र जीवन जीने की शक्ति और अनुग्रह दे सकते हैं। इसलिए यीशु ने खुद को हमारी खातिर बलिदान के रूप में चढ़ा दिया। उन्होंने हमारे लिए अपना पवित्र लहू बहाया है और क्षमा का सबसे बड़ा आशीर्वाद प्राप्त किया है। उन पर विश्वास रखें और उनके मुख को ढूंढ़ें ताकि वे आपको सब पापों से शुद्ध करें और आपको क्षमा करें। परमेश्वर आपकी विनती सुनेंगे और आपको एक पवित्र जीवन जीने में मदद करेंगे। परमेश्वर आपको आपके परिवार, नौकरी और व्यवसाय के सभी क्षेत्रों में सभी स्थितियों में एक पवित्र जीवन जीने में सक्षम करेंगे। ●

वे लोग जिन्होंने

अय्यूब – दु:ख

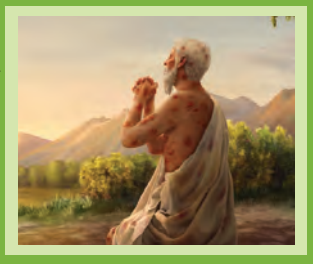

अय्यूब एक निर्दोष, सीधा और परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था। उसके 7 बेटे और 3 बेटियां थीं। उसके पास बहुत संपत्ति थी। उसके पास हजारों बकरियां, गाय, ऊंट व गधे थे। उनके पास 1000 से अधिक नौकर थे। शैतान ने जो अय्यूब से ईर्ष्या करता था, उसे नष्ट करने की योजना बनाई। परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब पर हाथ डालने की अनुमति दे दी। उसने उसके सभी बच्चों, संपत्तियों और मवेशियों को नष्ट कर दिया। तब शैतान ने उसे पैरों के तलवों से लेकर सिर तक दर्दनाक फोड़ों से दुख पहुँचाया। अय्यूब जो इसे सहन करने में अयोग्य था, उसने मिट्टी के बर्तनों का एक ठीकरा लिया और खुद को खुजलाने लगा। उसकी पत्नी ने उसे परमेश्वर को शाप देने और मरने के लिए कहा। लेकिन अय्यूब ने अपने सभी कष्ट को सहन किया। उसने कहा कि यहोवा ने ही दिया और उसी ने ले लिया। उसने कभी परमेश्वर के बारे में शिकायत नहीं की। अय्यूब ने कोई पाप न करके अंत तक अपनी पवित्रता को बचाया। यहोवा ने सारी आशीषें पहले से दुगनी करके दीं (अय्यूब 1:2,22; 2:9,10)

प्रिय युवाओं! अय्यूब की तरह चाहे कितना भी कष्ट क्यों न हो, प्रभु के विरुद्ध पाप मत करें। जब हम अपनी पवित्रता को बचाते हैं और अपने जीवन में उन संघर्षों के बीच विश्वासयोग्य रहते हैं जिनका हम सामना करते हैं तो हमें उनसे दुगनी आशीषें प्राप्त होंगी।

वे लोग जिन्होंने

आकान - सोने की अभिलाषा

यरीहो को हराने के बाद, यहोशू ने यरीहो से ऐ के पास पुरुषों को भेजा और उनसे कहा कि वे वहां की कमजोरी जानने के लिए इस क्षेत्र की जासूसी करें। जब वे लौटे तो उन्होंने कहा कि लगभग 3000 आदमी शहर को हराने के लिए पर्याप्त होंगे। यहोशू जिसने इस पर विश्वास किया, उसने केवल 3000 पुरुषों को ही भेजा। परन्तु ऐ के लोगों ने ऐसा घोर युद्ध किया कि उन्होंने 36 इस्राएलियों को मार डाला। जब यहोशू ने यह सुना तो वह अति दुखी हुआ, यहोवा के सन्दूक के सामने भूमि पर गिर पड़ा, और आंसू बहाए। यह देखकर यहोवा ने यहोशू को पुकार कर कहा, "खड़ा हो! तू क्यों इस भाँति मुँह के बल पृथ्वी पर पड़ा है? इस्राएलियों में से एक ने जो वाचा मैं ने उनसे अपने साथ बंधाई थी उसको उन्होंने तोड़ दिया है। उन्होंने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया, वरन् चोरी भी की और छल करके उसको अपने सामान में रख लिया है। यह मेरी आज्ञा के विरूद्ध है।" यहोशू को पता चला कि यह आकान के द्वारा चुराए गए थे। यहोशू को यह भी समझ आया कि यह आकान की अभिलाषा के पाप के कारण हुआ कि परमेश्वर ने उन्हें यह युद्ध हरवा दिया। आकान से कपड़े, चाँदी व सोने की ईंट छीनने के बाद उन्होंने उसे उसके घराने समेत पथराव करके मार दिया। आकान की मौत के बाद, इस्राएलियों ने ऐ शहर पर कब्जा कर लिया। (यहोशू अध्याय 7)

मेरे प्यारे जवानो, जब से आकान ने दुनिया की चीजों पर वासना करके पाप किया, परमेश्वर के क्रोध ने उसे नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार को मार डाला। जब आप कुछ सफल होना चाहते हैं तो परमेश्वर आपसे पवित्र होने की उम्मीद करते हैं। इसलिए पाप से दूर भागो।

पवित्रता को बचाए रखा

दानिय्येल - संकल्प

हालाँकि दानिय्येल को बाबुल के राजा ने बंदी बना लिया था, लेकिन उसने बाबुल के पापों से भ्रष्ट न होने का फैसला किया। वह केवल यही संकल्प लेकर रुका नहीं रहा। प्रार्थनाओं की मदद से उसने अपना फैसला पूरा करने की कोशिश की। दानिय्येल के संकल्प को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने राजा की दृष्टि में दानिय्येल को अनुग्रह प्रदान किया। परमेश्वर ने दानिय्येल व उसके मित्रों को राजा का भोज खाने वाले जवानों की तुलना में अधिक आकर्षक और चुस्त बना दिया। इसके अलावा उन्होंने उन्हें दूसरों की तुलना में ज्ञान, बुद्धि और चुस्ती से भर दिया। दानिय्येल ने एक पवित्र जीवन जीया जिससे परमेश्वर प्रसन्न हुए। उसने किसी भी तरह से भ्रष्ट न होने के द्वारा अपनी पवित्रता को बचाया। (दानिय्येल 1:3-20)

प्रिय युवा! क्या आप अपने संकल्प पर खड़े रहते हैं? या क्या आप अपने संकल्प को छोड़ देते हैं कि आप इसे पूरा करने में असमर्थ थे? दानिय्येल की तरह पवित्रता में दृढ़ रहें और परमेश्वर की आशीषें प्राप्त करें। जब हम एक पवित्र जीवन जीते हैं तो हमें उनका सम्मान और आशीर्वाद प्राप्त होंगे।

अपनी पवित्रता खो दी

अहाब- संपत्ति की अभिलाषा

यरीहो को हराने के बाद, यहोशू ने यरीहो से ऐ के पास पुरुषों को भेजा और उनसे कहा कि वे वहां की कमजोरी जानने के लिए इस क्षेत्र की जासूसी करें। जब वे लौटे तो उन्होंने कहा कि लगभग 3000 आदमी शहर को हराने के लिए पर्याप्त होंगे। यहोशू जिसने इस पर विश्वास किया, उसने केवल 3000 पुरुषों को ही भेजा। परन्तु ऐ के लोगों ने ऐसा घोर युद्ध किया कि उन्होंने 36 इस्राएलियों को मार डाला। जब यहोशू ने यह सुना तो वह अति दुखी हुआ, यहोवा के सन्दूक के सामने भूमि पर गिर पड़ा, और आंसू बहाए। यह देखकर यहोवा ने यहोशू को पुकार कर कहा, "खड़ा हो! तू क्यों इस भाँति मुँह के बल पृथ्वी पर पड़ा है? इस्राएलियों में से एक ने जो वाचा मैं ने उनसे अपने साथ बंधाई थी उसको उन्होंने तोड़ दिया है। उन्होंने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया, वरन् चोरी भी की और छल करके उसको अपने सामान में रख लिया है। यह मेरी आज्ञा के विरूद्ध है।" यहोशू को पता चला कि यह आकान के द्वारा चुराए गए थे। यहोशू को यह भी समझ आया कि यह आकान की अभिलाषा के पाप के कारण हुआ कि परमेश्वर ने उन्हें यह युद्ध हरवा दिया। आकान से कपड़े, चाँदी व सोने की ईंट छीनने के बाद उन्होंने उसे उसके घराने समेत पथराव करके मार दिया। आकान की मौत के बाद, इस्राएलियों ने ऐ शहर पर कब्जा कर लिया। (यहोशू अध्याय 7)

मेरे प्यारे जवानो, जब से आकान ने दुनिया की चीजों पर वासना करके पाप किया, भगवान के क्रोध ने उसे नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार को मार डाला। जब आप कुछ सफल होना चाहते हैं तो भगवान आपसे पवित्र होने की उम्मीद करते हैं। इसलिए पाप से दूर भागो।

मौन युद्ध

यिप्तह की बेटी

यिप्तह इस्राएल का दसवां न्यायी था और उसने छः वर्ष तक इस्राएल का न्याय किया (न्यायियों 12)। वह एक पराक्रमी वीर था (न्यायियों 11:1), विश्वास के योद्धाओं की सूची में एक पद प्राप्त किया (इब्रानियों 11:32), और वह पवित्र आत्मा से भर हुआ था (न्यायियों 11:29)। परन्तु उसने यहोवा से जो वादा किया वह सही नहीं था। जब वह अम्मोन के लोगों के खिलाफ लड़ने के लिए उनकी ओर बढ़ा, तो उसने परमेश्वर से प्रतिज्ञा की कि, यदि परमेश्वर अम्मोन के लोगों को उसके हाथों में देता है, तो जब वह अम्मोन के लोगों से शांति से वापस लौटता है तो जो भी सबसे पहले उसके घर के दरवाजे से बाहर आता है, निश्चय ही यहोवा का होगा और वह उसे होमबलि करके चढ़ाएगा (न्यायियों 11:30,31)। जैसे ही उसने प्रार्थना की, यहोवा ने अम्मोनियों को उसके हाथ में कर दिया। जब यिप्तह कुशल और बड़े आनन्द के साथ अपने घर आया, तब उसकी इकलौती बेटी ने उसका स्वागत किया, जो डफली बजाकर नाचते हुए उससे भेंट करने को निकली। जब उसने उसे देखा, तो उसने अपने कपड़े फाड़े और रोने लगा। उसकी बेटी को कुछ समझ नहीं आया। बाद में, उसे अपने पिता की मन्नत का पता चला कि उसे होमबलि के रूप में बलि चढ़ाया जाना है। हो सकता है कि उसके भीतर दो आवाजें लड़ रही हों।

वह किस तरह का पिता है? कितनी बेवकूफी वाली मन्नत है! क्या मुझे होमबलि के रूप में चढ़ाया जाना चाहिए? मेरा दिल नहीं मानता।

मेरे पिता की जीत के लिए, अगर यह परमेश्वर की इच्छा है कि होमबलि के रूप में चढ़ाई जाऊं, तो मेरा दिल खुशी से इसे स्वीकार करेगा। यहाँ तक कि परमेश्वर का आदेश भी अपने पिता और माता का सम्मान करना सिखाता है।

क्या मैं इसके लिए अपनी जान दे दूं? मेरे पिता का मुझसे बिना पूछे मूर्खतापूर्ण प्रतिज्ञा के कारण मेरा बलिदान करना कैसे उचित है?

जब कोई मनुष्य यहोवा की मन्नत माने, तो व्यवस्था कहती है कि वह एक भी शब्द पूरा किए बिना जो कुछ भी अपने मुंह से कहे वह अवश्य करे। केवल तब ही, वह एक पूर्ण पुरुष बनता है, मैंने सुना है। मैं अपने धर्मी पिता का पद बचाने के लिए एक बलिदान बनने के लिए पूरे दिल से स्वीकार करती हूं।

नहीं, मेरे जीवन और मृत्यु का फैसला मुझे ही करना चाहिए, न कि मेरे माता-पिता को। अगर मैं इसे स्वीकार करती हूं, तो मुझे देखकर कई माता-पिता अपने बच्चों को अपनी जीत और बेहतर जीवन के लिए बलि चढ़ा देंगे।

नहीं, नहीं। यहोवा अन्य बातों का ध्यान रखेगा। अपने पिता की धार्मिकता में और अधिक धार्मिकता और पवित्रता से और अधिक पवित्रता जोड़ने के लिए, मैं अपने आप को एक होमबलि के रूप में देना स्वीकार करूंगी।

इसलिए यिप्तह की बेटी ने दो अलग-अलग आवाजें सुनी होंगी। लेकिन उसने बाइबल के वचनों के आधार पर धैर्यपूर्वक और बुद्धिमानी से अपना निर्णय लिया और अपने पिता के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। बाइबल कहती है कि यिप्तह ने उसके साथ वैसा ही किया जैसा उसने अपनी मन्नत मानी थी। (न्यायियों 13:31)। यिप्तह की बेटी के नाम का बाइबल में उल्लेख नहीं है। वह अपने पिता के नाम से जानी जाती है। अपनी युवावस्था में उसकी कई कामनाएं होंगी, उसने मन में अपने भविष्य के लिए कई योजनाएँ बनाई होंगी। लेकिन फिर भी, एक बार जब उसे अपने पिता की प्रतिज्ञा के बारे में पता चला तो उसने पूरे दिल से वादा पूरा करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया।

प्रिय बेटे और बेटियाँ जो इसे पढ़ रहे हैं! क्या आप जानते हैं कि आप अपने माता-पिता का आदर करके परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं? इस दुनिया में, एक आदमी अपने दोस्तों या कुछ विशेष रिश्तों को चुन सकता है। लेकिन कोई भी अपने माता-पिता को नहीं चुन सकता। यह पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा तय किया गया है। सभी माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करें और न्याय और ईमानदारी के साथ उच्च पद पर बैठें। कोई भी माता-पिता अपने बच्चों को चोर या हत्यारे के रूप में नहीं देखना चाहते। यहां तक कि हमारे स्वर्गीय पिता भी चाहते हैं कि उनके बच्चे भी पवित्रता से परिपूर्ण हों जैसे वे पवित्र हैं। क्या आप परमेश्वर की सन्तान होने के नाते इस संसार के सदृश्य न होने, लेकिन अपने सब कामों में पवित्र होने की शपथ लेंगे? ●

JESUS REDEEMS

YOUTH WORLD

Sathiyam TV

YouTube

Comforter DIGITAL CHANNEL

EVERY SATURDAY ON SATHIYAM TV AT 6:30 AM
& AT 7AM IN YOUTUBE AND COMFORTER TV

DEAR YOUNGSTERS INTRODUCE
THIS TV PROGRAMME TO YOUR FRIENDS
AND SHARE TO US THE BLESSINGS THAT YOU
HAVE RECEIVED THROUGH THIS TO THE
BELOW GIVEN NUMBER

9750955547

वह दर्द में भागी... और स्वर्ण जीता!

यदि आप सफल होना चाहते हैं तो आपको दृढ़ संकल्प के साथ कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। अनजाने में हम में से बहुत से लोग असफलता और विश्वासघात के कारण पटरी से उतर जाते हैं। चींटी एक छोटा जीव होने के कारण एक चट्टान के माध्यम से रास्ता बना सकती है जो उसके रास्ते के विरूद्ध है। तुम एक चींटी से भी ज्यादा कीमती हो। यहाँ एक ऐसे ही एक मेहनती व्यक्ति की सफलता की कहानी दी गई है।

यदि आप सफल होना चाहते हैं तो आपको दृढ़ संकल्प के साथ कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। अनजाने में हम में से बहुत से लोग असफलता और विश्वासघात के कारण पटरी से उतर जाते हैं। चींटी एक छोटा जीव होने के कारण एक चट्टान के माध्यम से रास्ता बना सकती है जो उसके रास्ते के विरूद्ध है। तुम एक चींटी से भी ज्यादा कीमती हो। यहाँ एक ऐसे ही एक मेहनती व्यक्ति की सफलता की कहानी दी गई है।

हेप्टाथलेट सबसे कठिन एशियाई खेल है। यूनानी भाषा में हेप्टा का अर्थ है सात। हेप्टा शब्द में लंबी कूद, ऊंची कूद, 100 मीटर रिले, शॉटपुट और 800 मीटर दौड़ जैसे खेल शामिल हैं। इन खेलों को जीतना आसान नहीं है, जिनमें कठिन परिश्रम एवं अभ्यास की अधिक आवश्यकता होती है। आइए स्वप्ना की सफलता की कहानी देखते हैं।

स्वप्ना बर्मन एक भारतीय हेप्टाथलीट हैं। उसने 2008 एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता और 2017 एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में हेप्टाथलॉन में प्रथम स्थान हासिल किया।

बर्मन का जन्म पश्चिम बंगाल के गांव में एक गरीब परिवार में हुआ था। वह दोनों पैरों पर छह उंगलियों पाकर असामान्य लड़की है। उसकी मां बसाना एक चाय बागान में काम करती थीं और उसके पिता पचनन बर्मन एक रिक्शा चालक थे, और 2013 में एक स्ट्रोक का सामना करने के बाद बिस्तर पर पड़े हुए हैं, जिससे उनके चार बच्चों का जीवन कठिन बन गया। उसकी माता की थोड़ी कमाई उन्हें एक दिन में दो बार ही खिला पाती।

स्वप्ना को एथलेटिक्स के प्रति काफी लगाव था। उसकी रुचि देखकर एक कोच उसे प्रशिक्षण देने के लिए आगे आया। चूंकि उसके पैर में 6 उंगलियां थीं, इसलिए उसे सही जूता मिलना मुश्किल हो गया और उसके असामान्य पैरों ने उसे दर्द दिया क्योंकि वह अतिरिक्त चौड़े चलने वाले जूते नहीं खरीद सकती थी। उसने सामान्य जूतों के साथ अभ्यास किया, इससे उसके पैर में तेज दर्द और पीठ में दर्द होता था। 2013 में जूनियर एथलीट लंबी कूद में, उसने अपना पिछला रिकॉर्ड तोड़ दिया और राष्ट्रीय चैंपियन के रूप में खिताब जीता। 2014 में उसने एशियाई खेलों में भाग लिया जो कोरिया में आयोजित किया गया था और रिकॉर्ड में 5वां स्थान पाया। इस समय तक उसके कोण और रीढ़ की हड्डी में चोट लग गई थी और वह दो साल तक खेलों में भाग नहीं ले सकी। क्रिकेट खिलाड़ी राहुल द्रविड़ उनकी मदद के लिए आगे आए। उसने दांत दर्द और बुखार के बावजूद इंडोनेशिया में 2018 एशियाई खेलों में भाग लिया। चूंकि दवा की जांच सख्त थी, इसलिए उसने अपने दर्द के लिए कोई दवा नहीं ली और अपने दर्द को कम करने के लिए अपने जबड़े में प्लास्टर लगा लिया।

फिर भी उसने 6026 अंक बनाए और भारत के लिए 150वां स्वर्ण पदक जीता।

यदि हम स्वप्ना की जगह होते तो निराश होकर पूछते कि ये मैं ही क्यों हूं? मेरे जीवन में ये सब बातें क्यों हो रही हैं? मेरा जीवन इतना दर्दनाक क्यों है? लेकिन एक व्यक्ति जो जोरदार प्रहार करता और दर्द और असफलता का सामना करता है, वह सफल हो सकता है। प्रिय युवाओं! चाहे आप कितने भी दर्द से निकलें या असफल हों, इसे नजरअंदाज करें, स्वप्ना की तरह साहस और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ते रहें और सफल बनें। अपने लक्ष्य के लिए दौड़ें और आगे बढ़ें।

यीशु के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहें! लोगों का दुःख और यीशु का दूसरा आगमन।

यीशु के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहें! लोगों की असुरक्षा और यीशु का दूसरा आगमन!

इस श्रृंखला में, हम उन चिन्हों पर चर्चा करेंगे जो यीशु के दूसरे आगमन से पहले पृथ्वी पर घटित होंगे। इस महीने का लेख एक महत्वपूर्ण चिन्ह के बारे में भी है जो आज दुनिया में घटित हो रहा है। गृहयुद्धों से प्रभावित देशों में लोगों की आजीविका दयनीय है। खराब प्रशासन और लगातार युद्धों के डर से, लोग अपने जीवन की गारंटी के बिना अपने घर से दूर देश में भाग जाते हैं। जब लोग उचित दस्तावेज के बिना सीमा पार करते हैं, तो वे शरणार्थी बन जाते हैं। केवल अमीर ही आवश्यक दस्तावेजों के साथ बच पाते हैं। गरीब लोग इसे पूरा नहीं कर पाते हैं।

हाल ही में अफगानिस्तान के काबुल हवाई अड्डे पर एक हैरान कर देने वाला नजारा देखने को मिला। जब सोशल मीडिया पर फुटेज जारी किया गया तो उस दृश्य ने युद्ध-ग्रस्त देश में आशाहीनता की छवि छोड़ दी। लोग इसे देखकर चौंक गए जब हजारों लोग उस देश से बच निकलने व अपने बच्चों को एक सुरक्षित जीवन देने के लिए केवल विमान के पंखों पर और उसके ऊपर बैठकर एक विमान में चढ़ने के लिए धक्के देने लगे। दूसरी तरफ हजारों लोग अपना सामान लेकर अफगानिस्तान से भाग निकले लेकिन फिर भी सड़कों पर घूमते नजर आए।

सिर्फ अफगान में ही नहीं, बल्कि कई देशों में हम गरीबी, बेरोजगारी तथा अकाल के कारण लोगों को सड़कों पर घूमते हुए देखते हैं। इन घटनाओं को देखकर, परमेश्वर की सन्तान के लिए एक बात निश्चित है। लूका 21:25 पद जो कहता है कि यीशु के आने से पहले, "पृथ्वी पर देश-देश के लोगों को संकट होगा" यह बात मन में पूरी होती लगती है। यह दुखद है कि दुनिया भर में 1:6 बिलियन लोग उचित आश्रय के बिना हैं।

मेरे प्रिय युवाओ! तुम चाहो या न चाहो, यीशु मसीह इस पृथ्वी पर न्याय करने वाले न्यायी के रूप में लौटेगा। "इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।" लूका 21:36.

यीशु के आने से पहले की सारी भविष्यवाणियाँ पूरी होंगी। इसलिए, अपने आप को शुद्ध करो और उसके आने के लिए तैयार हो जाओ।

हम यीशु के आने के एक और चिन्ह को या अगली पत्रिका में देखेंगे। ●

प्रार्थना गाइड

अक्टूबर 2021

मौलिक शिक्षा

• भारत में 15 करोड़ से अधिक बच्चों और युवाओं के पास मौलिक शिक्षा नहीं है।

• 3-22 आयु वर्ग के बीच लगभग 50 करोड़ लोग हैं।

• जब भारत को स्वतंत्रता मिली, तब उसकी आबादी का केवल 19% ही शिक्षा प्राप्त कर पाया था।

• लेकिन स्वतंत्रता के 75 साल बाद 80% लोग शिक्षित हैं।

• 2014 में यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, 5.8 करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो स्कूल नहीं गए हैं।

प्रार्थना विषय

1. आइए हम प्रार्थना करें कि सभी को मौलिक शिक्षा मिले ताकि हमारे देश में कोई भी व्यक्ति ऐसा न हो जिसे मौलिक शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा न मिली हो।

2. हम प्रार्थना करें कि सरकार उन गांवों में स्कूल खोले जहां बुनियादी शिक्षा नहीं है।

3. हम प्रार्थना करें कि आज का समाज शिक्षा और शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट हो, जिसके लिए सभी योजनाओं को कार्यान्वित किया जाना है।

4. आइए प्रार्थना करें कि हर गांव, कस्बे व शहर में शिक्षा के प्रति जागरूकता आए।

5. आइए हम युवाओं के लिए प्रार्थना करें कि वे शिक्षा प्राप्त करने और ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए रुचि लें।

तंबाकू

• एक शोध अध्ययन में कहा गया है कि भारत में बच्चे दस साल की उम्र से ही तंबाकू का सेवन शुरू कर देते हैं।

• भारत में हर पांच में से एक बच्चा तंबाकू का सेवन कर रहा है।

• अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम राज्यों में छात्रों में तंबाकू का सेवन अधिक है।

• हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक राज्यों में छात्रों में तंबाकू का सेवन कम है।

• 10 वर्ष से कम आयु के बच्चों में 38% बच्चे धूम्रपान करते हैं, 47% बीड़ी पीते हैं और 52% बच्चे अन्य विभिन्न रूपों में तंबाकू का सेवन करते हैं।

प्रार्थना विषय

1. आइए हम उन बच्चों के छुटकारे के लिए प्रार्थना करें जो बहुत कम उम्र में तंबाकू का सेवन करना शुरू कर देते हैं।

2. आइए हम छात्रों के बीच तंबाकू के उपयोग को समाप्त करने के लिए प्रार्थना करें।

3. आइए हम उन बच्चों में जागरूकता के लिए प्रार्थना करें जो तंबाकू का सेवन कर रहे हैं।

4. आइए हम प्रार्थना करें कि सरकार तंबाकू उत्पादों जैसे बीड़ी, सिगरेट आदि पर प्रतिबंध लगाने के लिए अच्छी योजनाओं को लागू करे।

5. आइए हम प्रार्थना करें कि तंबाकू का उपयोग करने वाले बच्चे तंबाकू से होने वाली हानिकारक बीमारियों के बारे में समझें और धूम्रपान की आदत से छुटकारा पाएं।

वायु प्रदूषण

• विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) का अनुमान है कि दुनिया भर में वायु प्रदूषण के कारण हर साल लगभग 70 लाख लोग मारे जाते हैं।

• दिल्ली सरकार का कहना है कि दिल्ली रोड पर रोजाना 30 लाख वाहन यात्रा करते हैं।

• दुनिया के 6 सबसे प्रदूषित शहरों में से 5 शहर दिल्ली से 80 किलोमीटर के दायरे में हैं।

• तमिलनाडु में 2.80 करोड़ से अधिक वाहन हैं जो गंभीर वायु प्रदूषण का कारण बनते हैं।

• इंडियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च का कहना है कि भारत में वर्ष 2019 में वायु प्रदूषण के कारण 16.7 लाख मौतें हुई हो सकती हैं।

• ग्रीन पीस दक्षिणपूर्व एशिया का विश्लेषण कहता है कि वायु प्रदूषण के कारण चेन्नई में 11 हजार मौतें हुई।

प्रार्थना विषय

1. आइए हम प्रार्थना करें कि दुनिया भर में वायु प्रदूषण के कारण होने वाली मौतों को रोका जाए।

2. आइए हम वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण के कारण लोगों को घुटन से बचाने के लिए प्रार्थना करें।

3. आइए हम दिल्ली की सुरक्षा, वायु प्रदूषण की निकासी के लिए प्रयास करें और स्वच्छ हवा में सांस लेने के रास्ते खोले।

4. आइए हमें उद्योगों से वायु प्रदूषण के कारण होने वाली मौतों को रोकने के लिए प्रार्थना करें।

5. आइए हम सरकार के लिए प्रार्थना करें कि भारत को एक स्वच्छ राष्ट्र बनाने के लिए योजनाओं को लागू करें।

विनाश

• तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया है। अफगानिस्तान के लोग इस डर से भागने की कोशिश कर रहे हैं कि तालिबान की सरकार फिर से सख्त नियम ला सकती है।

• हैती में तेज भूकंप के कारण 1297 मौते हुई। 5700 लोग घायल हुए हैं। संपत्ति में भी भारी नुकसान हुआ है।

• तुर्की में भारी बारिश और बाढ़ के कारण 47 लोग मरे हैं।

• उत्तरकांड, फ्रांस, अमेरिका के ओरेगन राज्य में, यूनान, कैलिफोर्निया और अन्य देशों में इतिहास में बड़े पैमाने पर जंगलों में आग लगी है।

• वन भूमि का भारी नुकसान हुआ है और जंगलों की आग के कारण कई मौते हुई हैं।

प्रार्थना विषय

1. आइए हम अफगानिस्तान के लोगों के बीच शांति के लिए प्रार्थना करें।

2. आइए हम प्रार्थना करें कि भूकंप की स्थिति में जान-माल के नुकसान से बचाव हो।

3. आइए हम झाड़ियों की आग से प्रभावित हेक्टेयर भूमि की सुरक्षा और जंगल की आग से होने वाली मौतों की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

4. आइए हम प्राकृतिक आपदाओं और प्रकृति के कारण होने वाली मौतों के कारण होने वाले विनाश की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

5. आइए हम राष्ट्रों के बीच शांति और राष्ट्रों के जागृति के लिए प्रार्थना करें।

सही? गलत ?

बाइबल अनुसार मित्रता की सराहना करना सही है या गलत?

प्यारे भाई और बहन! हमारे प्यारे मित्र यीशु मसीह के नाम में नमस्ते। कोई नहीं कह सकता कि मेरा कोई दोस्त नहीं है क्योंकि आज की दुनिया में और सोशल मीडिया के माध्यम से, बहुत सारी दोस्ती उभर रही है, और किसी को भी दोस्त मिल सकते हैं। फिर भी, दोस्त होना सही है या गलत? यह लेख परमेश्वर की उन संतानों के लिए है जो वचनों से मित्रता/दोस्ती के बारे में खोजना व जानना चाहते हैं और इसे अपने जीवन में लागू करना चाहते हैं।

जीवन के लिए आपका दोस्त कौन है?

"ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है" (नीतिवचन 18:24)। क्योंकि वर्तमान संसार में, आपके अपने भाई से अधिक, अनेक मित्र आपको एक परिवार की तरह प्रेम करते हैं। मेरे कॉलेज के दिनों में कई बार मैं किसी भी दोस्त से दूर रहता था क्योंकि मुझे लगता था कि परमेश्वर दोस्ती से खुश नहीं होते। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि अच्छे दोस्त मिलना भी परमेश्वर की कृपा है।

यीशु ने भी अपने शिष्यों को उन्हें एक मित्र के रूप में संबोधित करने को पसंद किया (यूहन्ना 15:15)। हम इस पूरी दुनिया में यीशु जैसा सबसे अच्छा दोस्त कभी नहीं देख सकते हैं, क्योंकि यह वही था जिसने हमारे लिए अपना जीवन दिया (यूहन्ना 15:13)। जीवन भर के लिए एक दोस्त के रूप में, वह हमसे रोज बात करना चाहते हैं और हमारी ओर से यह उचित नहीं है कि हम ऐसे सच्चे दोस्त को इंतजार में रखें और हम किसी और के साथ समय बिताएं। जीवन भर अपने मित्र यीशु से अधिक किसी से प्रेम न करें। इसका मतलब है कि आप उसके बलिदान का अपमान करते हैं।

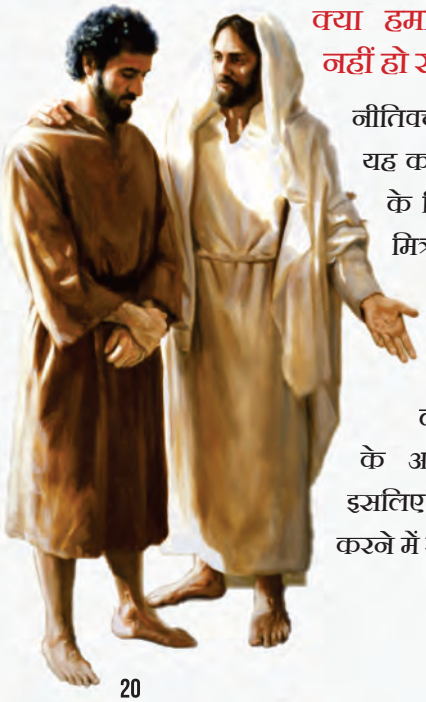

क्या हमारी अन्य मित्रताएँ नहीं हो सकतीं?

नीतिवचन 27:10 के अनुसार यह कहता है कि अपने स्वयं के मित्र या अपने पिता के मित्र को मत छोड़ क्योंकि मुसीबत के समय में मित्र ही हमारी सहायता करते हैं। लोग हमें अपने दोस्तों के आधार पर तौलते हैं। इसलिए सही मित्रता का चुनाव करने में सावधान रहें।

हम किस तरह की दोस्ती कर सकते हैं?

1शमूएल 18:1 में दाऊद और योनातान की मित्रता के बारे में खूबसूरती से उल्लेख किया गया है। योनातान ने उसे अपने प्राण के समान प्रेम किया और परमेश्वर की योजना को जानकर कि उसका राज्य दाऊद को दिया जाएगा, बिना किसी स्वार्थ के, वह उसके लिए बोला (1शमूएल 23:17)। सच्ची मित्रता में स्वार्थ नहीं होगा। इसलिए, ऐसे मित्र बनाएं जो स्वार्थी न हों और जो आपकी परमेश्वर की योजना में अगुवाई करें और आप भी ऐसा ही एक मित्र बनें। अय्यूब के द्वारा झेली गई विपत्ति के बारे में सुरकर, उसके दोस्तों ने उसे चिढ़ाया नहीं, बल्कि वे एक साथ शोक मनाने और उसे दिलासा देने के लिए आए (अय्यूब 2:11)। सोचें कि आपके दोस्त कैसे हैं?

क्या अनुचित मित्रता करना आवश्यक है?

अम्नोन (2शमूएल 13:3) और रहूबियाम (1राजा 12:8) इस बात के आदर्श उदाहरण हैं कि कैसे अनुचित मित्रता बुराई की ओर ले जाती है। अम्नोन लज्जित हुआ, अपने होश और जीवन खो बैठा। रहूबियाम ने वादा किया हुआ राज्य खो दिया। इसलिए, उन लोगों के मित्र-समूह के दबाव से दूर रहें जो आपको परमेश्वर के वचन में कही गई बातों के विरुद्ध चलाते हैं। अपना जीवन व स्वर्गीय राज्य न खोएं।

एक सच्चा दोस्त चापलूसी करने के लिए आपके गलत काम को सही साबित करने के बजाय गलती करने पर आपको सुधारेगा (नीतिवचन 27:6)। ऐसा कोई मित्र न रखें जो आपकी हर बात से सहमत हो। ऐसे दोस्त बनाएं जो आपको सही रास्ता दिखाते हों और जरूरत पड़ने पर आपको सही करते हों। एक सबसे अच्छा दोस्त आपको परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए मजबूर करेगा, न कि केवल उसके अपने शब्दों पर ध्यान देने के लिए। जो आपकी गलती बताता है वह एक सच्चा दोस्त है और जो आपकी गलतियों के बारे में दूसरों को बताता है वह आपका शत्रु है।

उपरोक्त मापदंडों के आधार पर विश्लेषण करें कि आपके मित्र किस प्रकार के हैं। आत्मिक मित्रों को महत्व दें जो आपको सही रास्ते पर ले जाते हैं। प्रभु आपकी मित्रता को स्वीकार करें और आपको आशीष दें! आमीन!

मैं सुसमाचार से नहीं

लज्जाता!

जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो बहुत से लोग हमसे प्रश्न पूछेंगे और व्यावहारिक समस्याओं का कारण बनेंगे। हाल के महीनों में, हमने देखा है कि ऐसे जटिल प्रश्नों का सही उत्तर देकर सुसमाचार प्रचार कैसे किया जाता है। हम ऐसे सवालों का सामना कैसे करते हैं? हम इस महीने भी इसके बारे में और अधिक देखना जारी रखेंगे।

यदि मैं पश्चाताप करूं, तो बहुत लोग मुझ पर हंसेंगे

जब हम सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बाहर जाते हैं, तो हम बहुत से लोगों को यह कहते हुए पाते हैं। ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि मैं इस शहर का एक नामी गुण्डा था। मैंने ऐसे घिनौने पाप किए हैं जो इस नगर के बहुतों को मालूम हैं। अगर मैं आज पश्चाताप करूंगा तो गाँव वाले मुझ पर हंसेंगे। मेरे पश्चाताप पर कोई विश्वास नहीं करेगा।

हमें उन्हें क्या जवाब देना चाहिए?

"क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिसका विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।" (यूहन्ना 5:4,5)

उन्हें ये दो पद दिखाएँ और उन्हें प्रभु से पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित करें।

- फिर उन लोगों से कहें जो इस तरह बोलते हैं कि वे उद्धार के करीब आ गए हैं।
- ऐसे लोगों की सेवा करने के लिए, हमें भी विश्वास में बढ़ना चाहिए और प्रार्थना में उनके साथ जुड़ते रहना चाहिए।
- उनके साथ दोस्ती विकसित करें।
- उनकी सभी शंकाओं को दूर करें।
- ऐसे लोग जल्द ही बच जाएंगे।

मुझे सताव से डर लगता है

जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो बहुत से लोग विश्वास करते हैं और विश्वास रखते हैं; वे यह भी स्वीकार करते हैं कि यह उनके लिए अच्छा है। लेकिन वे यीशु मसीह की संतान बनने के लिए अनिच्छुक हैं। क्योंकि उन्हें निम्नलिखित संदेह हो सकते हैं:

- अगर मैं मसीह को स्वीकार करता हूं, तो क्या मेरा परिवार मुझे यह कहकर अस्वीकार कर देगा कि मैं निचली जाति में शामिल हो गया हूं?
- अगर मैं चर्च में शामिल हो जाऊं, तो क्या मुझे शिक्षा और छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी?
- जब मैं काम की तलाश में भटकता हूं तो क्या मुझे उन लाभों से वंचित कर दिया जाएगा जिनका मैं हकदार हूं?
- जब मैं उच्च पद पर जाऊँगा तो क्या ईसाई धर्म का प्रमाण पत्र मुझे पीछे धकेल देगा?
- क्या वर्तमान सरकार के कानूनी कार्यक्रम विश्वासियों के लिए शत्रुतापूर्ण हैं?

हमें उन्हें क्या जवाब देना चाहिए?

"चखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो उसकी शरण लेता है।" (भजन 34:8) उन्हें यह पद बार-बार सुनाएं। यीशु अच्छे हैं; वह तुम्हारा भला ही करेंगे। उन्हें विश्वास के वचनों से प्रोत्साहित करें कि उनके जीवन में अच्छी बातें ही घटित होंगी।

पवित्र आत्मा अनुग्रह के द्वारा पश्चाताप करने में उन लोगों की अगुवाई करेगा जो आपके विरुद्ध बोलते हैं। तो आइए हम निडर होकर सुसमाचार का प्रचार करें; हम स्वर्ग में इसका प्रतिफल प्राप्त करेंगे! ●

पवित्र जीवन जीने के लिए

पवित्रता का महत्व

• पवित्रता परमेश्वर का आदर्श है (1पतरस 1:15,16)
• पवित्रता परमेश्वर की इच्छा है (1थिस्सलुनीकियों 4:3)
• पवित्रता परमेश्वर की बुलाहट है (1थिस्सलुनीकियों 4:7)
• पवित्रता परमेश्वर को देखने में मदद करती है (इब्रानियों 12:14)
• पवित्रता एक बर्तन को उपयोगी बर्तन के रूप में बदलती है (2तीमुथियुस 2:21)
• पवित्रता हमें स्वर्ग ले जाएगी (2पतरस 3:11,14)

किन बातों में पवित्रता की आवश्यकता है

• चलने में पवित्रता (1पतरस 1:15)
• आँखों में पवित्रता (मत्ती 6:22,23; यशायाह 14:3)
• शब्दों में पवित्रता (इफिसियों 4:29; अय्यूब 3:1; यशायाह 6:5)
• विचारों में पवित्रता (रोमियों 12:1,2)
• हृदय में पवित्रता (याकूब 4:8)
• कानों में पवित्रता (लूका 8:18)
• जीभ में पवित्रता (उत्पत्ति 27:1)
• पैरों में पवित्रता (नीतिवचन 4:26)
• हाथों में पवित्रता (भजन संहिता 24:3,4)
• आत्मा में पवित्रता (2कुरिन्थियों 7:1)
• आत्मा में पवित्रता (इफिसियों 5:27)
• शरीर में पवित्रता (2कुरिन्थियों 7:1)

पवित्र जीवन जीने की आवश्यकताएं

• यीशु का लहू (1यूहन्ना 1:7; इब्रानियों 13:12)
• परमेश्वर का वचन (यूहन्ना 17:17)
• परमेश्वर की आत्मा (1कुरिन्थियों 3:16)
• संतों की एकता (नीतिवचन 13:20)
• प्रार्थना जीवन (1तीमुथियुस 4:5)

पवित्र जीवन जीने के लिए करने योग्य काम

• पापों को स्वीकार करें (लूका 18:13)
• पापों का अंगीकार करें (भजन 32:5; नीतिवचन 28:13)
• पाप न करने का निर्णय करें (लूका 15:21)
• परमेश्वर पर भरोसा रखें (लूका 15:19)

पवित्र जीवन के आशीर्वाद

• शत्रु बहुत भय में रहेगा (मरकुस 1:23; प्रेरितों 16:17)
• प्रार्थना के लिए उत्तर प्राप्त करें (भजन संहिता 66:18)
• चमत्कारी चिन्ह होते हैं (यहोशू 3:5)
• परमेश्वर हमारा सम्मान करेंगे। (2 तीमुथियुस 2:20)
• स्वर्ग का दर्शन प्राप्त करें (निर्गमन 19:10)
• शत्रु पर विजय (यहोशू 7:13)
• परमेश्वर हमें आदर देंगे (2तीमुथियुस 2:20)
• स्वर्ग का दर्शन प्राप्त करें (निर्गमन 19:10)
• शत्रु के विरूद्ध विजय (यहोशू 7:13)
• ऊपर से सहायता पाएं (2राजा 4:9) ●

उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। (इब्रानियों 12:14)